ARYAVART SHODH VIKAS PATRIKA
RNI TITLED NO. UPBBIL04292
RNI REG. NO. UPBBIL/2014/66218 PP. NO.- 77-81
ISSN NO.-2347-2944
Vol-12, Issues-XII YEAR 2018 Extra

महात्मा गांधी के शिक्षा–चिंतन सबंधी सिद्धांत तथा वर्तमान परिप्रेक्ष्य में उसकी प्रासंगिकता

विजय कुमार वर्मा
असिस्टेंट प्रोफेसर– राजनीति विज्ञान विभाग, दयाल सिह महाविद्यालय (दिल्ली विश्वविद्यालय), दिल्ली, भारत

Received- 29.08. 2018, Revised- 04.09.2018, Accepted - 07.09.2018 E-mail: vijayvermadu@gmail.com

सारांश : *आज हमारी शिक्षा व्यवस्था छात्रों को उनके भावी रोजगार संबंधी आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए तैयार करने में असमर्थ है। इसके पीछे कारण अंग्रेजी शिक्षा प्रणाली का अंधाधुन अनुकरण है। आजादी के न जाने कितने सालों बाद भी हम अपनी शिक्षा व्यवस्था को सुदृढ़ करने में असमर्थ हैं। अंग्रेजों ने जिस प्रकार की शिक्षा व्यवस्था हमारे सामने रख कर गए। आज भी हम उसी के पीछे भेड़–चाल की तरफ भागते हुए चले जा रहे हैं। हमारे विद्यालय और महाविद्यालय पाठ्यक्रम प्रायः विभिन्न विषयों की सैद्धान्तिक जानकारी दिए जाने पर जोर तो देते हैं लेकिन वे तत्सम्बन्धी व्यवहारिक ज्ञान देने में असमर्थ हैं। इसलिए आज इंजीनियरिंग, बी.ए., एम.ए. एल.एल.बी और पीएचडी आदि किए हुए छात्रों के हाथ में रोजगार नहीं है। महात्मा गांधी शिक्षा के क्षेत्र में व्याप्त इस समस्या से भलीभांति परिचित थे। इसलिए उन्होंने बार–बार इस बात पर बल दिया है कि वर्तमान शिक्षा व्यवस्था हमारी मूलभूत जरूरतों जैसे– भोजन, वस्त्र और आवास को पूरा करने में अक्षम है। गांधी जी यह चाहते थे कि आने वाली पीढ़ी किसी भी तरह से बेरोजगार न रहे। इसलिए उन्होंने इस बात पर बल दिया कि शिक्षा को रोज की जरूरतों से भी जोड़ा जाए। इसके लिए उन्होंने बुनियादी शिक्षा (बेसिक शिक्षा), उच्च शिक्षा का उद्देश्य, पाठ्यक्रम की रूपरेखा, शिक्षा के व्यावहारिक पक्ष, शिक्षक और छात्र के सह–संबंध, विद्यालय और महाविद्यालय में दी जाने वाली शिक्षा कैसी हो आदि शिक्षा संबंधी अनेक सिद्धांत दिए। गांधी जी की शैक्षणिक विवेचनाओं ने भारत की भौगोलिक परिस्थितियों, यहां की सामाजिक, आर्थिक समस्याओं के अनुरूप क्रिया पर आधारित रोजगारन्मुख और हुनर मंदी को बढ़ावा देने वाली शिक्षा व्यवस्था की वकालत की थी। आज जब पूरा देश जिस बेरोजगारी का मार झेल रहा है तो ऐसी स्थिति में महात्मा गांधी द्वारा दिए गए शिक्षा संबंधी सिद्धांतों का पुनर्मूल्यांकन करना समचीन जान पड़ता है। अतः इस लेख में यह देखने का प्रयास भी किया गया है कि गांधी जी द्वारा जो शिक्षा– चिंतन संबंधी सिद्धांत है। वह कितना उपयोगी है, क्या यह रोजगार उन्मुख है? क्या यह शिक्षा व्यवस्था की खामियों को दूर करने में सक्षम है? इसके साथ आज के समय में गांधी जी के शिक्षा प्रणाली के क्या निहितार्थ हैं? आदि इन्हीं सभी सवालों की पड़ताल इस लेख में की गई है।*

कुंजी शब्द – रोजगार, संबंधी, असमर्थ, शिक्षा, प्रणाली, अंधाधुन, अनुकरण, व्यवस्था, विद्यालय ।

19 वीं शताब्दी में पुनर्जागरण के समय भारत में बड़ी तेजी से हो रहे अन्य परिवर्तनों में शिक्षा का विकास भी एक प्रमुख मुद्दा थ। हमारे देश में विभिन्न राजनीतिज्ञों, समाज सुधारकों ने उन्मुख कंठ से इस बात को स्वीकार किया कि शिक्षा के प्रचार–प्रसार के बिना भारत देश का विकास संभव नहीं है। देखते ही देखते यह हुआ कि जहां एक तरफ अंग्रेजी शिक्षा के प्रचार–प्रसार ने भारत की जनता को आधुनिक जीवन धारा से जोड़ा। वहीं दूसरी ओर अंग्रेजों की सोची समझी साजिश ने तमाम भारतीयों को भाषाई आधार पर मानसिक रूप से गुलाम बनाया। इसका परिणाम यह हुआ कि इस "विदेशी भाषा के माध्यम से दी जाने वाली शिक्षा के अलगाववादी एवं विभाजक परिणाम भी आरंभ से ही स्पष्ट थे जो आज भी दिखाई देते।"[1]

इस तरह धीरे–धीरे हिंदुस्तान का एक बहुत बड़ा वर्ग अंग्रेजी शिक्षा के प्रति ऐसा लालायित हुआ कि जिसका की परिणाम आज भी हमारे समाज में स्पष्ट रूप से दिखाई देता है। जहां समाज में धनाढ्य व्यक्तियों ने अंग्रेजी सीखे जाने पर अपने को सभ्य समझने का दम भरने लगे। वहीं दूसरी ओर गरीब वर्ग अंग्रेजी शिक्षा से वंचित और बेरोजगार होकर समाज के सबसे निचले पायदान पर जा पहुंचा। इस वंचित वर्ग के पास आज भी इतना धन नही है जो अपने बच्चों को अंग्रेजी शिक्षा की तालीम दे सकें। इसलिए महात्मा गाँधी ने अंग्रेजी भाषा का विरोध करते हुए कहा था कि "हमने अपनी मातृभाषाओं के मुकाबले अंग्रेजी से अधिक मुहब्बत रखी, जिसका नतीजा यह हुआ कि पढ़े–लिखे और राजनीतिक दृष्टि से जागे हुए ऊँचे तबके के लोगों के साथ आम लोगों का रिश्ता बिल्कुल टूट गया और उन दोनों के बीच एक गहरी खाई बन गई। यही वजह है कि हिंदुस्तान की भाषाएँ गरीब बन गयी हैं।"[2] इसके साथ यह भी स्पष्ट दिखता है कि "अंग्रेजों द्वारा छिछली, सतही थालियों में परोसी गई उनकी

अनुरूपी लेखक

शिक्षा हमें बेहतरीन शिक्षा की सुगंध और गर्माहट तो दे रही थी, लेकिन वह मूलभूत जरूरतें पूरी कर सके, जन–जन को रोजी रोजगार दे सके, उन्हें स्वाभिमान दे सके, खुद को भारतीय होने का गौरव दे सके ऐसा संभव नहीं हो सका था।"[3] गांधी जी ने वर्षों पूर्व भारत में शिक्षा के क्षेत्र में उत्पन्न हो सकने वाली इन समस्याओं के प्रति हमें सचेत किया था और इस बात की ओर हमेशा इशारा करते रहे कि शिक्षा के क्षेत्र में हो रहे परिवर्तनों में हमें अपनी खुद की जरूरतों को सर्वोपरि रखना चाहिए, और साथ ही अपनी मौलिकता को बचाए रखने का प्रयास भी करते रहना चाहिए।

महात्मा गांधी अंग्रेजों द्वारा भारत में प्रसारित उपभोक्तावादी संस्कृति की पोषण शिक्षा व्यवस्था को स्वीकार नहीं कर सके थे। वे यह भलीभांति जानते थे कि यह व्यवस्थाएं देश की ऊपरी परतों को रंगीन कर उसे अंदर से खोखला कर निर्बल कर देंगी। इसलिए महात्मा गांधी ने भारत में शैक्षिक स्तर पर उभर रही इन तमाम समस्याओं के निवारण के लिए व्यवहारिक शिक्षा संबंधी अनेक सिद्धांत दिए । अतः महात्मा गांधी की शिक्षा सम्बन्धी सिद्धांत की विवेचना निम्नांकित बिंदुओं द्वारा की जा सकती है :–

महात्मा गांधी जी ने शिक्षा के क्षेत्र में सबसे बड़ा काम बुनियादी शिक्षा (बेसिक शिक्षा) को लेकर किया। महात्मा गांधी शिक्षा के क्षेत्र में उत्पन्न हुई असमानता और बेरोजगारी को ध्यान में रखते हुए एक ऐसी बुनियादी शिक्षा का मॉडल हमारे सामने प्रस्तुत किया, जो आने वाली पीढ़ी को रोजगारन्मुख, समाज में भाई–चारा और समरसता जैसा भाव पैदा करें। इस बुनियादी शिक्षा मॉडल के भीतर उन्होंने यह प्रस्ताव रखा कि बुनियादी शिक्षा 6 से 14 वर्ष के बच्चों के लिए होनी चाहिए। जिसमें शिक्षा का माध्यम मातृभाषा होनी चाहिए। राष्ट्र के सभी बच्चों को सात वर्ष तक निःशुल्क एवं अनिवार्य शिक्षा प्रदान की जानी चाहिए ।

इस शिक्षा मॉडल के भीतर बच्चों के संपूर्ण शिक्षा का केंद्र शिल्प तथा हाथ से बनाए गए काम के लिए था। दरअसल गांधी द्वारा इस शिक्षा मॉडल का स्वरूप पूरी तरह से उद्योग केंद्रित शिक्षा थी। जिसमें बालक–बालिकाओं को स्वावलंबी बनाए जाने पर अधिक से अधिक बल दिया गया था। वर्धा सम्मेलन (1937) में प्रस्तावित इस योजना का देश भर में स्वागत हुआ। जामिया मिलिया इस्लामिया के तत्कालीन आचार्य डॉक्टर जाकिर हुसैन की अध्यक्षता में गठित समिति ने गांधी जी के इस शिक्षा योजना के आधार पर विस्तृत शिक्षा क्रम तैयार किया गया। बुनियादी शिक्षा की इस योजना को देश में 1938 में उन प्रांतों में लागू किया गया, जहां कांग्रेसी मंत्रिमंडल की स्थापना हो चुकी थी। आगे चलकर खेर समिति ने इसमें कुछ और सकारात्मक सुझाव दिए, जिन्हें बुनियादी शिक्षा के प्रारूप में दर्ज किया गया। कुछ समय बाद में बेसिक एजुकेशन बोर्ड का गठन भी हुआ। पुरानी स्कूलों को बेसिक स्कूलों में बदला गया। किंतु आगे चलकर आजादी के बाद देश में शिक्षा व्यवस्था का जो स्वरूप देखने को मिला, उसके भीतर गांधी जी द्वारा इस बेसिक शिक्षा की बहुत ही अवहेलना हुई। हुआ यह कि आजादी के बाद शिक्षा का पूरा का पूरा ढांचा अंग्रेजों द्वारा शिक्षा व्यवस्था के अनुरूप ही चलने लगा। देश के हर कोने में जगह–जगह कुकुरमुत्ते की तरह निजी स्कूल खुलने लगे और इन स्कूलों में अंग्रेजी शिक्षा को अनिवार्य कर दिया गया।

इस तरह आजाद भारत में गांधी के सपनों को तार–तार कर दिया गया। गांधी जी ने जिस बेसिक–शिक्षा को रोजगार परक और व्यावहारिक बनाने पर बल दिया था। वहीं आजादी के बाद इसे पूरी तरह हस्तकौशल और शिल्प से परे सिर्फ सैद्धांतिक शिक्षा तक केंद्रित कर दिया गया। आज 21वीं सदी के दौर में सबसे ज्यादा जरूरी है कि गांधी जी द्वारा सुझाए गए बुनियादी शिक्षा के भीतर शिल्प केंद्रित पहलुओं को लागू किया जाए, ताकि हमारा पूरा देश बेरोजगारी जैसी भीषण समस्या से निजात पा सके। गांधी जी शिक्षा को देश के प्रत्येक नागरिक तक पहुंचाना चाहते थे। इसलिए उन्होंने लॉर्ड मैकाले की चली आ रही शिक्षा प्रणाली के विरुद्ध देश के प्रत्येक शिक्षण संस्थानों के पाठ्यक्रम में बदलाव की वकालत की । उन्होंने विद्यालय पाठ्यक्रम को क्रिया प्रधान बनाए जाने पर अधिक जोर दिया। बेसिक शिक्षा की उनकी योजना में शिक्षा का माध्यम मातृभाषा को रखा गया था। इसके साथ ही आत्मनिर्भर के उद्देश्य से इसके अंतर्गत आधारभूत शिल्प (कृषि, कताई–बुनाई, गत्ते का काम आदि) सामान्य विज्ञान (जीव विज्ञान, वनस्पति विज्ञान, शरीर विज्ञान, रसायन शास्त्र, स्वास्थ्य विज्ञान, प्रकृति अध्ययन, भौतिकी संस्कृति, नक्षत्र ज्ञान) मातृभाषा, कला (ड्राइंग और संगीत) सामाजिक अध्ययन (इतिहास, भूगोल नागरिक शास्त्र) हिंदी (जहां मातृभाषा न हो) तथा शारीरिक शिक्षा (खेल कूद और व्यायाम) को शामिल किया गया था । गांधी जी भविष्योन्मुखी व्यक्ति थे। इसलिए उन्होंने बेरोजगारी से निजात पाने के लिए और विद्यार्थियों को स्वावलंबी बनाने के लिए भारत जैसे कृषि प्रधान देश में विद्यालयी पाठ्यक्रम में कृषि व हस्तशिल्प जैसे कामों को तरजीह दी थी। उनका यह ध्येय था कि शिक्षा की संपूर्ण प्रक्रिया किसी हस्तशिल्प या उद्यम के माध्यम से ही दी जाए। उनका विश्वास था कि एक शिल्प ही है जो कई शैक्षिक और सामाजिक समस्याओं को दूर कर सकता है। इस संदर्भ में उन्होंने कहा था कि "मेरी योजना ग्राम्य हस्तशिल्पओं के माध्यम से प्राथमिक शिक्षा देने की है। इस प्रकार हस्तशिल्प को मौन क्रांति का श्रेष्ठ संकेत माना जाता है। इसके कई

दूरगामी परिणाम हैं। यह शहर और गांव के बीच संबंध का एक स्वस्थ्य और नैतिक आधार प्रदान करेगा। इस प्रकार दीर्घकाल में वर्तमान सामाजिक असुरक्षा तथा वर्गों के बीच कटु संबंध की कुछ बुराइयों का उन्मूलन करेगा। यह हमारे गांव को नष्ट होने से रोकेगा तथा एक ऐसी न्यायप्रिय सामाजिक व्यवस्था की बुनियाद डालेगा, जिसमें धनी और निर्धन के बीच का कोई कृत्रिम विभाजक न रहेगा और प्रत्येक को स्थाई मजदूरी तथा स्वतंत्रता के अधिकार की गारंटी रहेगी।"[4]

गांधी जी शिक्षा को अधिक से अधिक मानवोपयोगी, समाजोपयोगी तथा रोजगारन्मुख बनाना चाहते थे। इसलिए उन्होंने पाठ्यक्रम को सैद्धान्तिकता की अपेक्षा व्यवहारिकता और हस्तशिल्प को सबसे अधिक महत्वपूर्ण माना। ताकि आने वाली पीढ़ी को उद्यमी और स्वावलंबी बनाया जा सके। लेकिन आज बड़े अफसोस के साथ कहना पड़ रहा है कि हमारे विद्यालय और महाविद्यालय शिक्षा के सिर्फ सैद्धान्तिक पक्ष को रटने पर बल देते हैं। लेकिन उसका व्यवहारिक और वह हमारे जीवन में कितना उपयोगी है। इस तरफ ध्यान ही नहीं देते हैं। अतः सबसे ज्यादा जरूरी है कि शिक्षा के पाठ्यक्रम को सैद्धांतिक से ज्यादा व्यावहारिक बनाने पर बल दिया जाना चाहिए।

गांधी जी ने विद्यालयी शिक्षण कार्य में बच्चों की आयु के अनुसार उनके मनभावों उनकी प्रकृति को एक शिक्षक द्वारा सही ढंग से स्वीकार किए जाने पर जोर दिया था। गांधीजी का मानना था कि छोटे बच्चों को अच्छे शिक्षण के लिए उन्हें खेल द्वारा सिखाने की कोशिश करनी चाहिए। वे यह भी मानते थे कि किसी बच्चे के लिए छोटे–छोटे खेल उनकी जिंदगी के छोटे–छोटे सबक बन कर उनकी शिक्षा का आधार बन जाएंगे। उनका मानना था "काम और खेल दो विभाग नहीं हैं। यदि बच्चा आगे बढ़ता है तो इसी तरह उसकी जिंदगी खेल या काम बन जाती है।"[5]

अतः बच्चों को स्वतंत्र रूप से खेलने का अवसर प्रदान करें, साथ ही उनके पाठ और विद्यालयी क्रियाओं को उसके साथ जोड़ देने का प्रयास करना चाहिए। उन्होंने यह भी कहा था कि "मेरे लिए तो सच्ची नई तालीम वही है जहां बच्चे खेलते–खेलते सीखे।"[6]

इस तरह हम देखते हैं कि गांधी जी ने क्रिया द्वारा सीखने पर विशेष बल दिया था। इस तरह महात्मा गांधी ने छात्र–छात्राओं की बढ़ती उम्र और बदलते पाठ्यक्रम के साथ–साथ उन्हें कैसे शिक्षित किया जाए, इसके लिए उन्होंने अनुकरण विधि, क्रिया विधि, अनुभव द्वारा सीखना, सह–संबंध विधि, मौखिक विधि, शिल्प के माध्यम से शिक्षण आदि विभिन्न शिक्षण विधियों को स्वीकृति प्रदान किया था।

गांधी जी ने वर्षों पूर्व भारत की जरूरतों के अनुरूप जिस शैक्षिक व्यवस्था का स्वरूप हमारे सामने रखा, उसमें उच्च शिक्षा की अपनी विशेष सामाजिक, वैयक्तिक जिम्मेदारियां दिखाई देती हैं। गांधी जी उच्च शिक्षा के विषय में इन संदर्भों के प्रति काफी ज्यादा सचेत रहे। गाँधी जी ऐसी उच्च शिक्षा चाहते थे कि कोई अध्ययनरत विद्यार्थी या फिर डिग्री प्राप्त करने के पश्चात बेरोजगार न बैठे। इसलिए उनका मानना था कि कृषि में रूचि लेने वाले एक विद्यार्थी को अगर कृषि की स्नातक डिग्री के साथ उपयुक्त रोजगार (कृषि संबंधी) मिले तो वह, अपनी रोजी रोटी का भी इंतजाम कर पायेगा। साथ ही वह अपने प्राप्त अनुभवों से नवीन अनुसंधान करके राष्ट्र को उन्नत बनाने में अपनी अहम भूमिका भी निभा पायेगा। गांधी जी का पूरा ध्येय इस ओर था कि उच्च शिक्षा प्राप्त विद्यार्थी अपने देश में बेरोजगारी की मार न झेलें। उनकी मान्यता ऐसे उच्च शिक्षा से थी जो रोजगारन्मुख हो। वे अपनी पढ़ाई के साथ–साथ विभिन्न उद्योगों से भी जुड़ कर धन कमा सकें। एक तरह से कहें तो गांधी जी की नजर में उच्च शिक्षा पूरी तरह से विद्यार्थी को स्वावलंबी बनाने पर टिकी हुई थी। इस संदर्भ में महात्मा गांधी कहते हैं कि "मैं कॉलेज की शिक्षा में कायापलट करके उसे राष्ट्रीय आवश्यकताओं के अनुकूल बनाऊंगा। यंत्र विद्या के तथा अन्य इंजीनियरों के लिए डिग्रियां होंगी। भिन्न–भिन्न उद्योगों के साथ जोड़ दिए जाएंगे और उन उद्योगों को जिन स्नातकों की जरूरत होगी उनके प्रशिक्षण का खर्च वे उद्योग ही देंगे। ३३३ डॉक्टरी कॉलेज प्रमाणित अस्पतालों के साथ जोड़ दिए जाएंगे। चूँकि यह धनवानो में लोकप्रिय है, इसलिए उनसे आशा रखी जाती है कि वे स्वेच्छा से दान देकर डॉक्टरी कॉलेजों को चलाएंगे।

कृषि कॉलेज तो अपने नाम को सार्थक करने के लिए स्वावलंबी होने चाहिए। मुझे कृषि स्नातकों का दुखद अनुभव है। उनका ज्ञान ऊपरी होता है। उनमें व्यवहारिक अंगों की जरूरतों के अनुसार चलने वाले और उन्हें अपनी डिग्रियां लेने के बाद अपने मालिकों के खर्च पर तजुर्बा हासिल नहीं करना पड़ेगा।"[7]

आज बहुत खेद के साथ कहना पड़ रहा है कि उच्च शिक्षा प्रणाली के बहुत सी खामियां हैं। आज भारत देश में करोड़ों विद्यार्थी उच्च शिक्षा की डिग्री प्राप्त कर बेरोजगारी की मार झेल रहे हैं। इसलिए हमें अपने वर्तमान शिक्षा प्रणाली में क्रियान्वयन की जरूरत है। अतः निसंदेह आज हम गांधीजी के उच्च शिक्षा के व्यवस्थापन व प्रबंधन संबंधी विचारों को अपनी व्यवस्थाओं में जगह देकर हम अपने युवाओं को रोजगार उन्मुख बना सकते हैं और एक सशक्त समाज का निर्माण कर सकते हैं।

महात्मा गांधी इस बात से भलीभांति परिचित थे कि

गांवों के विकास के बिना देश का विकास नहीं हो सकता है। इसलिए उनका सबसे ज़्यादा मन गाँवों में रमा। भारत एक कृषि प्रधान देश है। इसलिए महात्मा गांधी ग्रामीण पृष्ठभूमि की आवश्यकता के अनुरूप बुनियादी शिक्षा व्यवस्था की एक ऐसी रूपरेखा हमारे सामने रखी थी, जो हिंदुस्तान के तमाम बच्चों को, फिर गाँवों में रहने वाले हो या शहरों के भारत के प्रत्येक क्षेत्रों को एक साथ जोड़ने की ताकत रखती है। आज बहुत ही खेद का विषय है कि आजादी के बाद हमने आधुनिकीकरण की तेज गति के साथ हम स्वयं अपने देश की भाषा को अनदेखा कर आधुनिक अंग्रेजी शिक्षा के प्रचार–प्रसार पर इतना जोर देने लगे हैं कि समाज में एक अलगाववादी स्थिति पैदा हो गई है। हुआ यह है कि आर्थिक रूप से सक्षम लोगों ने अपने बच्चों की तालीम अंग्रेजी भाषा में देकर स्वयं को सभ्य समझने लगे। जिससे देश में दो वर्ग उठ खड़ा हुआ। पहला– अंग्रेजी पढ़ा–लिखा वर्ग और दूसरा– देशी भाषा बोलने वाला वर्ग। आज बहुत अफसोस की बात है कि हमने पश्चात संस्कृति के अंधाधुन अनुकरण के चलते महात्मा गांधी द्वारा प्रस्तुत किए गए बुनियादी शिक्षा को अनदेखा करते चले गए नतीजा यह हुआ कि भारत का एक बड़ा वर्ग शिक्षा प्राप्त करने के बाद भी आज सड़कों पर इधर–उधर नौकरी के लिए अपनी चप्पलें घिस रहा है। ऐसा इसलिए है कि आज हमारी शिक्षा व्यवस्था का ढांचा अंग्रेज सरकार द्वारा स्थापित आधार पर ज्यों का त्यों खड़ा है। दरअसल में अंग्रेजों द्वारा स्थापित शिक्षा व्यवस्था के प्रारूप को ज्यों का त्यों स्वीकार कर हमने अपनी मूलभूत शैक्षिक समस्याओं को बहुत ही अनदेखा की है। एक तरफ बड़ी संख्या में विद्यार्थियों ने सैद्धांतिक की नीति नियमों से परिचित तो हुए लेकिन वे व्यावहारिक प्रयोग से अनभिज्ञ रहे। हमारे विद्यालय और महाविद्यालय विद्यार्थियों को शिक्षा प्रदान तो करते हैं लेकिन यह शिक्षा अध्ययनरत विद्यार्थियों को प्राथमिक शिक्षा, माध्यमिक शिक्षा और उच्च शिक्षा से संबंधित व्यवहारिक दक्षता प्रदान करने में अक्षम हैं । हमारे वर्तमान समय की शिक्षा व्यवस्था ऐसी है कि हर जगह इसने असमानता की जड़ों को पहले से और अधिक मजबूत करने का कार्य किया है। चाहे वह सामाजिक स्तर पर हो या फिर शैक्षणिक स्तर पर। जैसे हमें पता है कि उत्तर प्रदेश और बिहार जैसे राज्यों में पढ़ाई हिंदी माध्यम से होती है। होता क्या है कि विद्यार्थी कक्षा 1 से लेकर 12 कक्षा तक तो हिंदी माध्यम से है। लेकिन जैसे ही वह इंजीनियरिंग या उच्च शिक्षा के लिए विश्विद्यालय में जाता है वैसे ही वहाँ शिक्षा का माध्यम अंग्रेजी हो जाता है। ऐसी स्थिति में हिंदी माध्यम वाले विद्यार्थियों की आधी ऊर्जा तो अंग्रेजी माध्यम में पढ़ाएं गए चीज़ों को ही समझने में निकल जाती है। उच्च शिक्षा हो या फिर नौकरी हर जगह अंग्रेजी की ही बोलबाला है। बहुत ही चिंता की बात है कि हमारी वर्तमान शिक्षा व्यवस्था विद्यार्थियों की सहजता और उनके व्यवहारिकता पर बिल्कुल भी ध्यान नहीं देती है। इसलिए विद्यालयों या महाविद्यालयों से शिक्षित होकर निकले बालक लंबे परिश्रम के बावजूद कोई ऐसा हुनर नहीं सीख पाता जिससे कि वह अपनी जीविका चला सके। महात्मा गांधी अंग्रेजी शिक्षा व्यवस्था के मूल में निहित इस समस्या से भलीभांति परिचित थे । यही कारण है कि उन्होंने भारत के बालक बालिकाओं के लिए बुनियादी शिक्षा की वकालत की थी इसलिए उन्होंने 6 से 14 वर्ष आयु के बच्चों की रुचि, रुझान, योग्यता व आवश्यकता को ध्यान में रखकर निर्मित इस योजना के पाठ्यक्रम में हस्तकला, कताई–बुनाई, काष्ठ–कला, चर्मकार्य, कृषि,फलों और साग, सब्जी के उद्योग या प्राकृतिक तथा सामाजिक वातावरण के अनुकूल अन्य कोई हस्तकला जिसका शैक्षणिक मूल्य हो, इन सभी को बुनियादी शिक्षा में स्थान दिया गया है। इसके साथ ही बुनियादी शिक्षा पाठ्यक्रम के भीतर मातृभाषा, गणित, सामाजिक विषय, सामान्य विज्ञान, स्वास्थ्य विज्ञान, चित्रकला, संगीत आदि को रखा गया है। महात्मा गांधी द्वारा बुनियादी शिक्षा पाठ्यक्रम का ढांचा पूरी तरह से सैद्धांतिक ज्ञान की अपेक्षा सबसे अधिक व्यवहारिक उपयोगिता से परिचय कराता है। इसलिए हमारी आज की जरूरत भी यही है कि विद्यार्थियों के लिए ऐसे पाठ्यक्रम बनाए जाएं जो व्यावहारिक ज्ञान से इपरिचित करा सकें। गांधी जी ने कहा था "ओटाई और कताई आदि गाँवों में चलने योग्य हाथ–उद्योगों के द्वारा प्राथमिक शिक्षण की मेरी योजना की कल्पना, चुपचाप चलने वाली ऐसी सामाजिक क्रांति के रूप में की गई है, जिसके अत्यंत दूरगामी परिणाम होंगे। वह शहरों और गांवों में स्वस्थ और नैतिक संबंधों की स्थापना के लिए सुदृढ़ आधार पेश करेगी और इस तरह मौजूदा सामाजिक भेद और वर्गों के पारस्परिक संबंधों मौजूदा कटुता की बुराइयां बड़ी हद तक दूर होंगी।"[8]

इस तरह हम देखते हैं हैं कि गांधी जी की बुनियादी शिक्षा पूरी तरह से उद्योग केंद्रित और स्वावलंबी बनाने पर आधारित है। जो इसकी उपादेयता आज भी है।

यह ठीक है कि औद्योगिकीकरण, व तमाम आधुनिक परिवर्तनों के कारण आज उत्पादन के लगभग हर क्षेत्र में मशीनों का सहारा लिया जा रहा है। हाथ का काम तथा हाथ से बनी वस्तु का चलन बड़ी तेजी से घटा है लेकिन यह भी एक बड़ा सच है कि भारी संख्या में स्कूल कॉलेजों से शिक्षा प्राप्त युवा बेरोजगार खड़े हैं। उनके पास अपनी रोजी–रोटी कमाने का कोई जरिया नहीं है । गांधी जी की बुनियादी शिक्षा के प्रारूप (जिसमें समय और मांग के अनुरूप आवश्यक परिवर्तन अपेक्षित है) के अंश यदि हमारी शैक्षणिक व्यवस्था में सम्मिलित होते तो ये युवक

युवतियां स्वरोजगार द्वारा रोजगार हासिल कर सकते थे। हम देखते हैं कि स्वतंत्रता प्राप्ति के पश्चात भारत में जिस तरह की शिक्षा व्यवस्था ने आकार लिया है। उससे शिक्षा वर्ग विशेष की उन्नति से संबंधित हुई है। वर्तमान शिक्षा व्यवस्था ने वर्ग भेद को बढ़ावा दिया है। समाज का एक ऐसा वर्ग जो उच्च शिक्षा का इच्छुक नहीं है तो शिक्षा का प्राथमिक व माध्यमिक स्तर रोजगार के नजरिए से कुछ दे पाता हो ऐसा दिखाई नहीं देता। शिक्षण संस्थाएं पैसा कमाने का एक बड़ा स्रोत बन कर रह गई हैं। इन सबके तमाम नकारात्मक प्रभाव हमारे जनजीवन पर देखने को मिल रहे हैं। अतः इन सभी नकारात्मक प्रभावों से निजात पाने का एक ही तरीका है, वह यह कि महात्मा गाँधी के शिक्षा सम्बन्धी सिंद्धान्तों पर गम्भीरता से अमल किया जाए। साथ ही वर्तमान शिक्षा प्रणाली में क्रियान्वयन करके गाँधी जी द्वारा रोजगारन्मुख और स्वावलम्बी बनाये जाने वाले शिक्षा प्रणाली को लागू किया जाए। तभी जाकर हमारा और हमारे देश की उन्नति होगी।

गाँधी जी की शिक्षा सम्बन्धी सिंद्धात रोजगारन्मुख और स्वावलम्बी बनाये जाने पर केंद्रित है। इसलिए शिक्षा व्यवस्था की कमियों को देखते हुए सबसे ज्यादा जरूरी यही है कि महात्मा गांधी द्वारा शिक्षा संबंधी दिए गए सिद्धांतों को एक बार पुनः अपनी वर्तमान शिक्षा व्यवस्था के अनुरूप बनाए जाने की कोशिश करनी चाहिए। तभी जाकर हम अपनी वर्तमान शिक्षा व्यवस्था को रोजगारपरक और उद्योग केंद्रित बना सकते हैं। महात्मा गाँधी ने शिक्षा सम्बन्धी अनेक सिंद्धान्त दिए हैं जिसकी उपादेयता आज भी ज्यों की त्यों बनी हुई है। उन्होंने बुनियादी शिक्षा, उच्च शिक्षा, रोजगारन्मुख शिक्षा, पाठ्यक्रम की रूपरेखा कैसी हो, विद्यालय तथा विश्वविद्यालय में अध्यापकों द्वारा बच्चों को शिक्षण कैसे दिया जाना चाहिए आदि शिक्षा सम्बन्धी विचार प्रकट किए हैं। आज इन सभी बातों पर ध्यान देने की जरूरत है। तभी जाकर हम अपनी वर्तमान शिक्षा प्रणाली को सुदृढ़ और रोजगारन्मुख बना पाएंगे।

संदर्भ ग्रन्थ सूची

1. सरकार, सुमित, आधुनिक भारत, सुशीला डोभाल द्वारा अनूदित, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली, 2012, पृ.84.
2. गाँधी, मेरे सपनों का भारत, पूर्व सन्दर्भित, नवजीवन प्रकाशन, अहमदाबाद, 2008, पृ.221.
3. श्रीवास्तव, रश्मि, महात्मा गांधी का शिक्षा–चिंतन, राष्ट्रीय पुस्तक न्यास, नई दिल्ली, पृ.41.
4. गाँधी मोहनदास करमचंद, मेरे सपनों का भारत, राजपाल एन्डसंस, नई दिल्ली, 2008, पृ.158.
5. श्रीवास्तव, रश्मि, महात्मा गांधी का शिक्षा–चिंतन, राष्ट्रीय पुस्तक न्यास, नई दिल्ली, पृ.69 से उध्दृत
6. वही पृ.69 से उध्दृत।
7. गाँधी, नई तालीम की ओर, नवजीवन प्रकाशन, अहमदाबाद, 1959, पृ.97.
8. श्रीवास्तव, रश्मि, महात्मा गांधी का शिक्षा–चिंतन, राष्ट्रीय पुस्तक न्यास, नई दिल्ली, पृ.89 (हरिजन पत्रिका से उध्दृत)।

*****